आरंभ अच्छा तो सब अच्छा

सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'*

वेदों में बताया गया है कि माँ पहली गुरु, उसकी गोदी पहली कक्षा और घर पहली पाठशाला होती है। अनौपचारिक रूप से सीखने के इस विधान से निकलकर बच्चे जब पहली-पहली बार औपचारिक शिक्षा के अंतर्गत स्कूली जीवन में कदम रखते हैं, तो उनके समक्ष अनेक चुनौतियाँ मुँह बाए खड़ी रहती हैं, जैसे—नए-नए लोगों से सामंजस्य स्थापित करना, नए परिवेश में स्वयं को ढालना आदि। आरंभिक कक्षा के शिक्षक के सामने अनेक चुनौतियाँ होती हैं। पाठशालाई दुनिया में पहली-पहली बार कदम रखने वाले बच्चों को पाठशाला में बनाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है। यदि अध्यापिका कुछ बातों के प्रति सजग रहे तो वह इन चुनौतियों का सामना कर सकती है। आरंभिक शिक्षा, अध्यापिका का व्यवहार और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया कैसी हो, इन सबके बारे में यहाँ चर्चा की गई है।

आरंभिक कक्षा ही वह कक्षा है जिसमें अधिकतर बच्चे स्कूली दुनिया में पहला कदम रखते हैं और आरंभिक कक्षा ही वह कक्षा है जो अधिकतर बच्चों का किताबों की दुनिया से परिचय कराती है। यही वह कक्षा है जो बच्चों के मन में पढ़ाई-लिखाई, किताबों, स्कूल और शिक्षकों के प्रति एक नजरिया विकसित करती है। यह नजरिया अगर सकारात्मक होता है तो पढ़ने की दहलीज पर कदम रखने वाला बच्चा स्कूली दुनिया में प्रविष्ट होकर सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता चला जाता है। इसके विपरीत स्कूल के प्रति यदि बच्चे का रवैया आरंभिक कक्षा में नकारात्मक बन जाता है तो बच्चों को शाला त्यागते देर नहीं लगती और कई बार तो आरंभिक कक्षा ही आखिरी कक्षा बनकर रह जाती है।

अपनी बोली, मीठी बोली

स्कूल में पहले-पहल कदम रखने वाले प्रत्येक बच्चे अपने साथ अपनी बोली, संस्कृति, रहन-सहन की पद्धति और आदतें साथ लाते हैं। बच्चे को स्कूल में बनाए रखने में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रहती है। आरंभिक कक्षा के शिक्षक की जिम्मेदारी अन्य कक्षाओं के शिक्षकों की तुलना में अत्यंत चुनौतीपूर्ण है। माँ की ममतामयी गोद से निकलकर विद्यालय में कदम रखने वाले इन नन्हें-मुन्ने बच्चों को परिवार के सदस्यों-सा स्नेह देना, उनके साथ

**शोधार्थी*, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद 500 007

घुल-मिल जाना आरंभिक चुनौती है। प्रायः बच्चे जब अपने घर की बोली में कक्षा में कोई बात कहते हैं तो शिक्षक द्वारा उसे तुरंत टोक दिया जाता है। भाषा की कक्षा में तो शिक्षक इस बात पर विशेष रूप से जोर देते हैं कि बच्चे मानक भाषा का व्यवहार करें। मानक भाषा तो बच्चे धीरे-धीरे सीख ही लेंगे पर आरंभिक कक्षा में बच्चे पर मानक भाषा में ही बात करने के दबाव का दुष्परिणाम यह होता है कि बड़े ही उत्साह से अपनी बात कहने को तत्पर बच्चे चुप हो जाते हैं। मानक भाषा में बात करने में असमर्थ बच्चे का आत्मविश्वास लड़खड़ा जाता है। लड़खड़ाते आत्मविश्वास वाले बच्चे फिर कभी मुखर होने का साहस नहीं जुटा पाते। हमारी बहुभाषिक संस्कृति हमारी पहचान है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 भी बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में इस्तेमाल करने की सिफारिश करता है। बच्चे की घर की बोली को सम्मान देकर ही बच्चे के आत्मसम्मान को बनाए रखा जा सकता है। आरंभिक कक्षा के शिक्षक बच्चे को अपने शब्दों, अपनी बोली में बोलने का अवसर देकर अत्यंत सहजता से उनके मन को भी स्पर्श कर सकते हैं। बच्चों को उनकी बोली में मिठास का घोल अपने आप मिल जाता है, जिससे उनकी बातचीत में सहजता अपने आप प्रकट होने लगती है।

सीखने-सिखाने का अपनापन

शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की, चाहे वह किसी धर्म-जाति, वर्ग का हो, क्षमता पर भरोसा जताना नितांत आवश्यक है। हर बच्चे को विश्वास दिलाना है कि हाँ, मैं सीख सकता हूँ, मैं पढ़-लिख सकता हूँ। बच्चे के सिर पर रखा शिक्षक का स्नेह भरा हाथ उसे भरोसा दिलाएगा कि हाँ, मेरे शिक्षक मुझे अपना मानते हैं। शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों की मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था करने का हर संभव प्रयास करें। कई बार देखा गया है कि पूर्वाग्रहों से युक्त होने के कारण शिक्षक अनजाने में बच्चों के साथ भेदभाव कर जाते हैं। शिक्षक का पक्षपातपूर्ण रवैया बच्चे को स्कूल से विमुख कर देता है। इसलिए उसे जाति, धर्म, वर्ग आदि के किसी भी पूर्वाग्रह से स्वयं को मुक्त रखते हुए कक्षा के प्रत्येक बच्चे के करीब पहुँचना चाहिए।

सीखने का माहौल

सीखने पर माहौल का बड़ा प्रभाव होता है। यदि माहौल बच्चों की मर्जी जैसा होगा तो बच्चों का मन खूब लगेगा। शिक्षक के सामने एक बड़ी चुनौती है बच्चों के अनुकूल वातावरण निर्माण करने की। अकसर विद्यालय परिसर में तथा कक्षा के भीतर बड़े-बड़े सूक्ति वाक्य लिखे रहते हैं। इन वाक्यों का बच्चों की वास्तविक जिंदगी से कोई मतलब नहीं है। ऐसी लिखित सामग्री बच्चों को अपनी ओर नहीं खींचती। बच्चों की रुचि की मुद्रित सामग्री चारों ओर लगी रहेगी तो बच्चे उसे देखेंगे, अनुमान लगाकर पढ़ने की कोशिश करेंगे और पढ़ने की दुनिया में कदम रखेंगे। सुंदर चित्र, कोई अच्छा-सा कार्टून, अच्छी-सी कविता, मजेदार-सा वाक्य कुछ भी हो सकता है। कोई भी चार्ट या मुद्रित सामग्री लगाते समय ध्यान रखें कि बच्चे उसे आसानी से देख और पढ़ सकें। वह बच्चों की पहुँच के भीतर हो। मुद्रित सामग्री ही नहीं कक्षा

में रखी किताबें, ब्लैकबोर्ड, डस्टर, चॉक सब कुछ ऐसे स्थान में रखे हों जहाँ बच्चों का हाथ आसानी से पहुँच जाए। इसलिए बच्चों के लिए एक अच्छा माहौल उपलब्ध कराना शिक्षक और अभिभावक दोनों की समान जिम्मेदारी है।

कहानियों के बहाने

कहानी कल्पनाशीलता का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बच्चों को कहानी सुनने और कहने में बहुत मजा आता है। आरंभिक कक्षा के शिक्षक के पास बच्चों के मनपसंद विषयों की कहानियों, कविताओं का अच्छा-खासा खजाना होना चाहिए। कितना अच्छा हो यदि प्रतिदिन कक्षा की शुरुआत रोचक किस्से-कहानी से हो। कहानी का आनंद बच्चों को दिनभर के लिए उमंग तथा उत्साह से लबालब कर देगा। कहानी का विषय बच्चों की पसंद का और उनके परिवेश से जुड़ा हो। भाषा बच्चों की अपनी हो और कहानी सुनाने का तरीका रोचक हो। बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर कहानी सुनाएँ। प्रतिदिन एक कहानी न केवल बच्चे को विद्यालय की ओर आकर्षित करेगी, बल्कि शिक्षक से उसका स्नेहिल नाता भी बड़ी सरलता से बन जाएगा। कहानी के बाद बच्चों से संवाद करें। विभिन्न भाषायी कौशल कहानी के माध्यम से बड़ी सहजता से बच्चों में विकसित किए जा सकते हैं। साथ ही बच्चों से भी कहानी सुनाने के लिए कहा जा सकता है। इसके लिए चित्रों अथवा फ्लैश कार्डों का इस्तेमाल किया जा सकता है। चित्र दिखाकर बच्चों की कल्पनाशीलता को प्रोत्साहित किया जा सकता है। शिक्षक चाहे तो कहानी का आरंभ, मध्य अथवा अंत बताकर भी बच्चों से बतिया सकते हैं। ऐसा करने से बच्चों को बड़ा मजा आता है। इसके लिए शिक्षक का हाव-भाव, कहन-शैली आकर्षक होने चाहिए।

बालगीतों के संग

बच्चे बालगीतों को बड़े चाव से गाते हैं। इसमें लय, गति, तुक होने के कारण बच्चे बहुत जल्दी याद कर लेते हैं और गाते हैं। बच्चों की रुचि के विषयों पर आधारित बालगीत सुनाएँ और बच्चों को साथ में दोहराने के लिए कहें। बालगीत की दो-चार पंक्तियाँ सुनाने के बाद बच्चों से गाने के लिए कहें। जैसे—

अम्मा आज लगा दे झूला,
इस झूले पर मैं झूलूँगा।
उस पर चढ़कर, ऊपर बढ़कर,
आसमान को मैं छू लूँगा।

फिर इसी तरह शेष पंक्तियों को गाने के लिए कहना चाहिए। इससे बच्चे बड़ी रुचि लेकर गाते और उसमें रम जाते हैं।

झूला झूल रही है डाली,
झूल रहा है पत्ता-पत्ता।
इस झूले पर बड़ा मजा है,
चल दिल्ली, ले चल कलकत्ता।

शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों को इसी तरह के कुछ और बालगीत सुनाएँ जिससे वे हँसी-खुशी सीखने के माहौल का आनंद उठा सकें।

सीखने-सिखाने की न हो कोई सीमा

पाठशाला प्रबंधन व शिक्षक समय-सीमा या समय-सारिणी को लेकर अधिक गंभीर न हों। उनका उद्देश्य सीखने-सिखाने पर केंद्रित होना चाहिए।

उन्हें इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि कविता-कहानी सुनाने के दौरान इनका भरपूर आनंद बच्चों को लेने दें। अगर बच्चे कहानी पर चर्चा जारी रखना चाहते हैं तो ऐसा करने दें। इसका मतलब है कि उन्हें कहानी में रस मिला। यह सोचकर तुरंत कोई अन्य विषय पढ़ाना न आरंभ कर दें कि फलाना कालांश की घंटी समाप्त हुई, अब अन्य कालांश की घंटी में फलाना विषय ही पढ़ाना है। सीखना-सिखाने की प्रक्रिया में लचीलेपन का होना नितांत आवश्यक है। नन्हे-मुन्ने बच्चे जब आरंभिक बार स्कूल आते हैं तो कभी-कभी उनका मन नहीं लगता, रोना आरंभ कर देते हैं, कक्षा में पढ़ाई में उनका ध्यान नहीं लगता, अपनी बात कहने में कुछ बच्चे काफी समय लगाते हैं। इन सबसे आसानी से वही शिक्षक पार पा सकते हैं जिसमें धीरज का गुण हो। बच्चों की बात को पूरी तन्मयता और धैर्य से सुनें। गतिविधि कराते समय आपने गोले में खड़े होने के लिए कहा और बच्चे आपके अनुसार बताए गोले में न खड़े होकर आड़े-तिरछे खड़े हों तो डाँटिए नहीं। नन्हे बच्चे धीरे-धीरे स्वतः सीख जाएँगे। उनसे यह अपेक्षा करना कि विषय का जितना इनपुट हम देते हैं उतना वे आउटपुट रूप में देंगे तो यह अनुचित है। इसके लिए पाठशाला प्रबंधन और शिक्षकों को चाहिए कि वे अपनी सोच बदलें और बच्चों की मानसिकता के अनुरूप अपनी कार्य योजना बनाएँ।

हर बच्चा खास है

यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हर बच्चा खास होता है। हर बच्चे में कोई न कोई हुनर अवश्य होता है। कई बच्चे ऐसे परिवारों से आते हैं जहाँ माता-पिता या अभिभावकों के पास इतना समय नहीं होता कि वे बच्चों की प्रतिभा को पहचानें। इस पहचान के लिए पारखी नजर चाहिए होती है। शिक्षक को चाहिए कि वे कक्षा में प्रत्येक बच्चे के हुनर की पहचान करने तथा विकसित करने की चुनौती का सामना बड़ी तत्परता के साथ करें। यह वह दशा होती है जो बच्चों को स्वयं के प्रति रुचि उत्पन्न करने में सहायक है। साथ ही इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि कक्षा में प्रत्येक बच्चे को चाहे वह लड़का हो या लड़की किसी न किसी गतिविधि में नेतृत्व का अवसर अवश्य दें। कार्य में अगुवाई करने से बच्चों में बचपन से ही निर्णय लेने तथा नेतृत्व की क्षमता का विकास होगा। कक्षा में प्रत्येक गतिविधि में लड़के-लड़की दोनों को समान अवसर दें। लिंगभेद का मुद्दा कहीं भी उनपर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हावी न होने दें। कक्षा की व्यवस्था, दीवारों पर लगी सामग्री तथा शिक्षण के दौरान भी इस बात के प्रति सजग रहना होगा कि लड़के-लड़की दोनों के साथ समानता का व्यवहार हो रहा है, उन्हें समान गरिमा और अवसर दिए जा रहे हैं। शिक्षक के लिए नितांत सजग रहकर चुनौतीपूर्ण ढंग से अपने दायित्वों का निर्वाह करना अवश्यंभावी हो जाता है।

चलो चलें सबके संग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की सहभागिता की संस्तुति करती है। वास्तव में सीखने के दौरान बच्चों की भागीदारी निरंतर बनी रहे तो सीखना बच्चों को नीरस और उबाऊ नहीं लगता है,

बल्कि सीखने की प्रक्रिया उनके लिए आनंदमय बन जाती है और कुछ करते-करते वे कैसे सीख लेते हैं, उन्हें इसका अनुमान भी नहीं होता है। इसके लिए शिक्षक को चाहिए कि सभी धर्म, जात-पात, भाषा के बच्चों में भेदभाव रहित वातावरण का निर्माण करें। जब वे सभी बच्चों को समानता के साथ सिखाएँगे तब सबका विकास होगा। बच्चों के लिए प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रथम प्रेरणास्रोत होते हैं। इसलिए कड़े अनुशासन के नाम पर उन्हें अपने से दूर नहीं करना चाहिए। अनुशासन के नाम पर बच्चों को हैड डाउन, फिंगर ऑन योर लिप्स, हाथ बाँधकर चुपचाप बैठा देने से कक्षा में निष्क्रियता और बोझिलता पसर जाएगी। सक्रियता बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। उन्हें स्वयं कुछ करने, बाहर जाकर पेड़-पौधों आदि का अवलोकन करने, आपस में बातचीत करने के अवसर देने से ही तो वे स्वयं ज्ञान की रचना कर पाएँगे। बच्चे सक्रिय रहेंगे तो कुछ न कुछ करेंगे, सीखेंगे। सीखने की दशा में अनुशासनहीनता का तो सवाल ही नहीं उठता है। सभी बच्चों को आपस में घुलने-मिलने का पूरा अवसर दें। जब बच्चे एक-दूसरे का साथ पाते हैं और इस प्रक्रिया में शिक्षक सेतु का काम करते हैं तब सबका विकास स्वमेय होने लगता है।

खुद से खुद को जाँचें

नन्हें-मुन्ने बच्चे बड़े क्रियाशील और उत्साही होते हैं। वे सदैव कुछ न कुछ करते रहते हैं। अतः उन्हें अलग से जाँचने की आवश्यकता नहीं है। बच्चों की प्रगति की जाँच सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। किसी भी स्तर पर, विशेषकर प्राथमिक स्तर पर बच्चों की प्रगति की तुलना अन्य बच्चों से करने की भूल कदापि न करें। इससे बच्चों में हीन भावना जन्म लेती है और वे हतोत्साहित हो जाते हैं। आगे चलकर इसके दुष्परिणाम भी देखने को मिल सकते हैं। बच्चों की प्रगति की जाँच उनकी पहले की प्रगति से तुलना करते हुए करें। जानने का प्रयास करें कि उन्होंने पहले से कुछ ज्यादा अच्छा किया है या वह पहले की तुलना में पिछड़ गए हैं। कहाँ पर सुधार की जरूरत है? अच्छा करने पर बच्चों की सराहना अवश्य करें। अच्छा न करने पर उन्हें डाँटे नहीं, बल्कि सहारा दें, आगे अच्छा करने को प्रोत्साहित करें। आपसे मिला सहारा ही आगे अच्छे प्रदर्शन के लिए उनका संबल बनेगा। हो सके तो समय पर बच्चों के माता-पिता या अभिभावकों से बातचीत करें। आरंभिक कक्षा के शिक्षक के लिए नितांत आवश्यक है कि बच्चों के माता-पिता या अभिभावकों से भी उनका संवाद लगातार बना रहे। गृह शिक्षक के रूप में अभिभावक की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। बच्चों के संबंध में शिक्षक और गृह शिक्षक यानी अभिभावक दोनों सजग रहें और दोनों का ही पर्याप्त स्नेह तथा उचित एवं पर्याप्त मार्गदर्शन बच्चे को समय-समय पर मिले तो आरंभिक कक्षा के बच्चों के लिए विद्यालयी जीवन एक सुखद अनुभव बन सकता है।

निष्कर्ष

बच्चे के जीवन में तीन लोगों का बड़ा योगदान होता है। पहला माता-पिता, दूसरा प्राथमिक पाठशाला के गुरु और तीसरा मित्र। इनके बिना जीवन अधूरा-सा लगता है। इनकी कमी में जीवन पथभ्रष्ट हो सकता है।

जहाँ तक बात स्कूली जीवन की है तो प्राथमिक पाठशाला के शिक्षकों को हम चाहकर भी नहीं भुला सकते। सच्चे अर्थों में जीवन का मार्गदर्शन कोई करता है तो वे प्राथमिक स्तर के शिक्षक ही होते हैं। अतः प्राथमिक स्तर के शिक्षकों का यह दायित्व बन जाता है कि वे अपने दायित्वों को भलीभाँति निभाएँ और बच्चों की आरंभिक शिक्षा के जीवन में मील का पत्थर साबित हों। ध्यान देने पर पता चलता है कि इस स्तर के बच्चों में किसी चित्र, वस्तु अथवा तथ्य को जिज्ञासापूर्वक देखने की इच्छा तीव्र होती है। उनके इसी विशिष्ट गुण का शिक्षकों को भरपूर लाभ उठाना चाहिए। इस स्तर पर एक बार जो उनमें रुचि जागृत हो जाती है, वह आगे जाकर कभी मद्धिम नहीं पड़ती। सभी छात्रों पर ध्यान केंद्रित करने से उनमें बचपन से ही आत्म-सम्मान की भावना पनपने लगती है। यही आत्म-सम्मान उन्हें आगे चलकर नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने और आदर्श नागरिक बनने में सहायता करता है। वे स्वयं अपनी क्षमताओं और कमजोरियों को जानने लगते हैं, और उनमें पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना अन्य लोगों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने की क्षमता बढ़ने लगती है। यह प्रक्रिया एकाएक नहीं होती, लेकिन इसकी शुरुआत यहीं से होती है। एक अध्यापिका के होने के नाते आप अपने आरंभिक अवस्था के छात्रों को अपने विशेष गुणों और आदर्शों से प्रभावित कर सकती हैं।

यह वह अवस्था है जहाँ पढ़ने-पढ़ाने के ढंग में लचीलापन की माँग सबसे अधिक होती है। अध्यापिका होने के नाते आपको यह समझना होगा कि बच्चे बालगीत किस तरह सुनना पसंद करते हैं, कहानियों का हाव-भाव युक्त प्रस्तुतिकरण कैसे हो, अभिनय-संवाद के पर्याप्त अवसर कब-कब उपलब्ध कराए जा सकते हैं आदि का गहराई से विचार करने के बाद उसे आचरण रूप देना नितांत आवश्यक है। इस अवस्था के बच्चे बड़ी कक्षा के बच्चों की तरह जल्दी से घुलते-मिलते नहीं है। उनमें कहीं-न-कहीं भय का पर्दा बना रहता है। पढ़ने की प्रक्रिया बहुत बाद में आती है, सबसे उस भय के पर्दे को हटाना ही दुष्कर कार्य होता है। यह दुष्कर कार्य भी सरल, सुगम हो सकता है तथापि अध्यापिका उन्हें अपनापन दे। बच्चे अध्यापिका में माँ का प्रेम ढूँढते हैं, दोस्तों की तरह खेलने की इच्छा रखते हैं और आँखों में अपनापन खोजने की कोशिश करते हैं। एक बार अध्यापिका माँ का रूप धारणकर मित्रवत व्यवहाररत करते हुए आँखों से नेह की वर्षा करे तो इन बच्चों का भविष्य सुनहरा हो जाता है। अध्यापिका को चाहिए कि वह कक्षा में कोई चीज विशिष्ट छात्रों, समूहों या व्यक्तियों के लिए उपयोगी नहीं है, तो अपनी योजनाओं को बदलने या गतिविधि को रोकने के लिए तैयार रहें। लचीला होना आपको समायोजन करने में सक्षम करेगा ताकि आप सभी छात्रों को अधिक प्रभावी ढंग से शामिल कर सकें।

शिक्षा का अर्थ सच्चे अर्थों में आनंद होता है। जिसमें आनंद न आए वह शिक्षा नहीं हो सकती। प्राथमिक स्तर के बच्चों को खेल-खेल में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में अनभिज्ञ रूप से सम्मिलित करना चाहिए। इस स्तर पर बच्चों का सीखना उनके खेल का हिस्सा होना चाहिए। जो भी क्रियाकलाप करवाएँ उनमें 'मैं' की भावना पनपनी

चाहिए। आरंभिक दशा में स्वास्थप्रद शिक्षा 'मैं' की भावना से ही आरंभ होती है। आगे चलकर यही 'मैं' सशक्त 'हम' में परिवर्तित होता है। इस स्तर पर सबसे अधिक मायने रखने वाले कोई चीज है तो वह है— भाषा। अध्यापिकाओं को चाहिए कि वे जिस भाषा का उपयोग करती हैं उसके बारे में सावधानी से सोचें और बोलते समय अपनत्व को दर्शाने वाली सरल शब्दावली का प्रचुर मात्रा में उपयोग हो। सकारात्मक भाषा और प्रशंसा का उपयोग करें, और छात्रों का तिरस्कार न करें। हमेशा उनके बर्ताव पर टिप्पणी करें, उन पर नहीं।

अंतिम और महत्वपूर्ण बात यह है कि इस स्तर के बच्चों के लिए एक सुरक्षित, स्वागत करने वाले अधिगम वातावरण का सृजन करें। यह ज़रूरी है कि सभी विद्यार्थी स्कूल में सुरक्षित और वांछित महसूस करें। हर एक से परस्पर सम्मानपूर्ण और मित्रवत बर्ताव को प्रोत्साहित करके आप अपने छात्र को वांछित महसूस कराने की स्थिति में होती हैं। इस बारे में सोचें कि स्कूल और कक्षा अलग-अलग छात्रों को कैसी दिखाई देगी और महसूस होगी। इस विषय में सोचें कि उनसे कहाँ बैठने को कहा जाएगा और सुनिश्चित करें कि दृष्टि या सुनने संबंधी दुर्बलताओं या शारीरिक विकलांगताओं वाले छात्र ऐसी जगह बैठें जहाँ से पाठ उनके लिए सुलभ होता हो। निश्चित करें कि जो छात्र शर्मीले हैं या आसानी से विचलित हो जाते हैं वे ऐसे स्थान पर हों जहाँ आप उन्हें आसानी से शामिल कर सकते हैं। इन सब सावधानियों का सबसे बड़ा परिणाम यह निकलता है कि वे धीरे-धीरे प्रश्न पूछने लगते हैं। इस क्रम में उनसे बहुत सारी गलतियाँ होती हैं। अध्यापिका को चाहिए कि वे इन गलतियों पर खीझ न दिखाकर, बल्कि उन्हें सीखने का अंग मानें। ऐसा जब-जब होगा तब-तब सीखना सार्थक होगा।

संदर्भ

नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजुकेशन : टुवर्डस प्रिपेयरिंग प्रोफेशनल एंड ह्यूमन टीचर. 2009. नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन, नई दिल्ली.

नेशनल नॉलिज कमिशन रिपोर्ट. 2007. भारत सरकार, नई दिल्ली.

पट्टानायक, बी. गुप्ता. 2015. लोकल आर्ट एजुकेशन फॉर होल चाइल्ड डेवलपमेंट एट अर्ली स्टेज. *क्रिएटिंग युअर क्लासरूम कम्युनिटी*. ब्रिजेस एल. स्टेनहाउस पब्लिशर्स, यूनिसेफ.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

वेब्स्टर, एल. रीड. 2012. *दि क्रिएटिव क्लासरूम*. कॉलिन्स, लंदन.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

www.cry.org

www.educationonline.org